मासिक
RNI No. MPHIN/2004/14249

# अक्षर वार्ता

वर्ष - 19 अंक - 5
(मार्च - 2023)
Vol - XIX Issue No - V
(March - 2023)

मूल्य: 100 /- रूपये

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

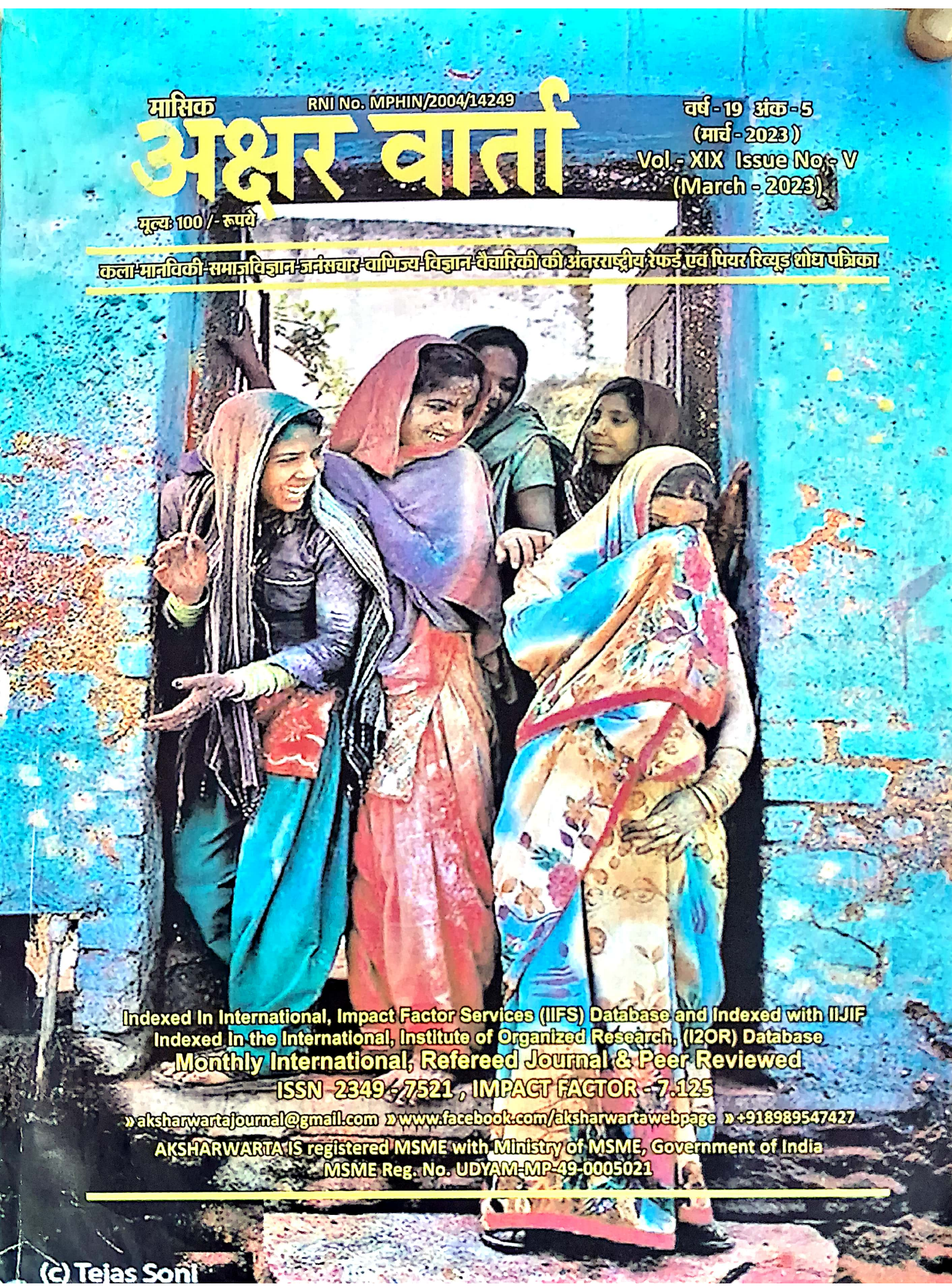

Indexed In International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
Indexed In the International, Institute of Organized Research, (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 7.125

» aksharwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427

AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

(c) Tejas Soni

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम


» कथाकार राजकमल चौधरी की वैचारिक संरचना के तत्व
डॉ. सुभाषचन्द्र गुप्त 07

» भगवानदास मोरवाल के 'बाबल तेरा देस में' उपन्यास में लोक साहित्य के तत्व
सविता, डॉ. गुंजन 14

» हिंदी साहित्य के मनोवैज्ञानिक सरोकार
रजनीश कुमार त्रिपाठी 17

» शिल्प विविधता के कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु
डॉ. भेरूलाल मालवीय 19

» हिन्दी साहित्य के कथाव्यास : मुंशी प्रेमचन्द
डॉ. यामिनी राय 22

» "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय समाज में वृद्धों की समस्याएँ"
डॉ. सोनिका बघेल 25

» गुरू गोरखनाथ का योगबोध और युगबोध
डॉ. निमिषा सिंह 28

» वैदिक कालीन समाज में योग एवं स्वास्थ्य का सहसंबंध : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
विमला महरिया 31

» वेदों में निहित पर्यावरण संरक्षण के नीतिगत मूल्य : जैव विविधता संरक्षण के संदर्भ में
डॉ. प्रदीप कुमार 33

» रामधारी सिंह दिनकर और कुसुमाग्रज के काव्य में राष्ट्रीयता का जागरण
डॉ. वरूणराज युवराज तौर 36

» स्वामी विवेकानंद : जीवन और दर्शन (नरेन्द्र कोहली साहित्य के संदर्भ में)
अमित मुकाती, डॉ. कला जोशी 39

» प्रतिरोध और समकालीन कविता
डॉ. वंदना कुमार, प्रवीण कुमार यादव 42

» गांधी और दिनकर
डॉ. प्रभा शर्मा 45

» हिमाचल में लीलानाट्य परंपरा : स्त्रोत एवं स्वरूप
डॉ. मीनाक्षी दत्ता 48

» पत्नी मनोरमा देहि में विवाह की स्थिति - मृदुला सिन्हा
दीपमाला मिश्रा, डॉ. सनकादिक लाल मिश्रा 51

» स्वामी विवेकानन्द के व्यवहारिक वेदान्त में बंधन एवं मुक्ति
यतीन्द्र कुमार यादव, डॉ. अनिल कुमार सोनकर 53

» दलित साहित्य : वैचारिकी
डॉ. प्रदीप कुमार 56

» अधिकारों के मानदंड पर सहजीवन
ममता कुमारी 65

» अनामिका के काव्य में स्त्री-विमर्श के विविध पक्ष
जितेंद्र वाघेला 69

» अनुवाद का परिदृश्य और भविष्य की संभावनाएं
सुश्री अन्नू इंदौरा 72

» भारत में ई-गवर्नेंस के लाभ एवं चुनौतियाँ
डॉ. माया रावत 75

» 'पटरंगपुर पुराण' उपन्यास में ऐतिहासिक तत्व
भास्कर सिंह धामी 78

» जयपुर संभाग में पर्यटन उद्योग के बढ़ते स्वरूप का आर्थिक विश्लेषण
भूपेन्द्र कुमार महेन्द्रा, डॉ. महेश सिंह राजपूत 82

» केन्द्र-राज्य संबंधों के विविध आयाम
डॉ. संजय कुमार तिवारी, डॉ. नंदिनी तिवारी 87

» गांधीवादी दर्शन : प्रासंगिकता एवं संभावित शिक्षाशास्त्र
डॉ. नवनीत शर्मा 89

» सभ्य समाज से टकराता उपन्यास नाला सोपारा
सुमन राजभर 91

» 'अंबा नहीं मैं भीष्मा' उपन्यास में स्त्रियों की दशा व दिशा का आंकलन
सुविज्ञा प्रशील, डॉ. गीता पांडे 94

» हाड़ौती के स्वतंत्रता संग्रामकालीन हिन्दी के समाचार पत्रों के लेख एवं इनका राजनैतिक चेतना के विकास में योगदान
डॉ. शिवकुमार मिश्रा 96

» आदिवासी कहानियों में चित्रित विस्थापन का खतरा
माधुरी वैश 100

» गढ़वाल हिमालय की भौगोलिक व ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
डॉ. डी. एस. भण्डारी 103

» राजस्थानी लोक गाथा 'ढोला मारू रा दूहा' में जातीय संस्कृति का विकास
डॉ. राजेश गुप्ता 106

» भारतीय संविधान में परिवर्तन : प्रगति और स्थिरता का दर्शन
डॉ. नगेन्द्र पाल 108

» पारिवारिक क्षेत्र में आदिवासी महिला की भूमिका
डॉ. यास्मीन अख्तर सिद्दकी 114

» गुप्तकालीन राजस्व व्यवस्था : एक पुनरावलोकन
डॉ. तोफिक हुसैन 117

» 'भूमण्डलीकरण में हिन्दी भाषा का प्रभुत्व'
शिवप्रकाश, प्रो. उर्विजा शर्मा 120





Scanned with OKEN Scanner

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 7.125
Vol - XIX, Issue - V, March - 2023
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

# कथाकार राजकमल चौधरी की वैचारिक संरचना के तत्व

डॉ. सुभाषचन्द्र गुप्त

हिन्दी विभाग, करीम सिटी, कॉलेज, जमशेदपुर, झारखण्ड

कथाकार राजकमल चौधरी की रचनाशीलता अपनी समग्रता में उस पीढ़ी की प्रस्तुति है जिसका मानस-संस्कार 'स्वातंत्र्योत्तर' भारत में बना और इतिहास के रूप में झेलने को मिला 'साठोत्तरी' युग-परिवर्तन। विगत सदी के छठे-सातवें दशक के (1955-65) पूरे रचनात्मक परिदृष्य पर राजकमल चौधरी ने गहरी छाप छोड़ी लेकिन अपने समकालीन आलोचकों की नजर से ओझल रहें। अपने समकालीनों के बीच विचारधारात्मक और सर्जनात्मक धरातल पर अनेकानेक अंतर्विरोधों से जूझते हुए उन्होंने अपनी अलग पहचान बनायी तथा रचना-प्रक्रिया के स्तर पर सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक यथार्थ की ऊपरी सतह को भेदकर अनदेखी परतों को प्रस्तुत किया और हमारे सोच के लिए एक नयी एवं अछूती जमीन पेश की। उनकी रचना-यात्रा 1955 से 1965 तक की छोटी-सी कालावधि में सिमटी है और उसमें भी उनका सक्रिय और महत्वपूर्ण लेखन 1960 से 1965 के बीच हुआ। 1965 से 1967 तक वे अस्वस्थ रहे और 19 जून 1967 को उनकी मृत्यु हो गई। कथाकार राजकमल चौधरी की रचनाओं में सच, सच की तरह है और झूठ, झूठ की तरह। इस कथाकार की रचनाषीलता अपनी मूल दृष्टि (विजन) और 'सृजन' में पारदर्शी एवं निष्कपट है। राजकमल चौधरी का व्यक्ति और उसका लेखक एक ही स्तर पर जीवन को भोगता है। उनका जीवन-विवेक और रचना-विवेक एक दूसरे का पर्याय रहा है। दरअसल, राजकमल चौधरी का जीवन एवं लेखन भारतीय इतिहास के उस कालखण्ड से गुजरा जब विदेशी सत्ता, इस देश से अपने को समेट चुकी थी और उसकी अनुगामी देशी सत्ता अपने पाँव पसारने और उसे मजबूती से स्थापित करने में क्रियाशील थी। विदेशी सत्ता के अवसान पर भारतीय जनमानस ने मुक्ति की साँसें लेना शुरू तो किया लेकिन नवजात देशी सत्ता में मुक्ति की सहज साँसें लेना संभव नहीं हुआ। देशी सत्ता के छद्मवेषी चरित्र और बहुरंगी चेहरे सामने उभरकर आने लगे। इन विरोधाभासों को देखने, समझने और महसूस करने के क्रम में लोगों के बीच काफी भ्रम फैला और लोगों ने इसे कई आँखों से देखा। राजकमल चौधरी को भी इन कठिनाईयों का सामना करना पड़ा और इन कठिनाईयों से गुजरने के क्रम में वे सच के समीप आते रहे और दूर भागते रहे। इसी नजदीक आने और दूर भागने की प्रक्रिया में उनकी रचनात्मक संवेदना और अभिव्यक्ति का पूरा विधान संष्लिष्ट हुआ है। यही कारण है कि राजकमल चौधरी के कथा-साहित्य में अपने समय एवं समाज का जो 'बिम्ब उभरता है, लगता है वह एक रणक्षेत्र है जहाँ लोगों की लड़ाईयाँ जारी हैं - भीतर की, बाहर की।

आर्थिक उत्पादन व वितरण की पद्धति, राजनीतिक व्यवस्था, समाज की सांस्थानिक इकाईयों की संरचनाएँ और सामाजिक-राजनीतिक परिदृष्य में सक्रिय विभिन्न प्रकार की दृष्य-अदृष्य शक्तियों के मूर्त-अमूर्त प्रभावों की पहचान से ही किसी भी कालखण्ड की मूल आकृति उभरकर सामने आती है। कथाकार राजकमल चौधरी की जीवन-शैली, नमक-तैल की अनिवार्यताओं से जूझती उनकी यातनामयी जीवन-स्थितियाँ, उनके गहरे मानवीय सरोकार और गैर-प्रतिष्ठानी बौद्धिकता, उनमें निहिलिज्म और यूटोपिया की एक साथ उपस्थिति, उनके जीवन और लेखन की प्रयोगधर्मिता, अवसाद भोगी अन्तर्दृष्टि और अल्पायु जीवन का दुखद अन्त - इन तमाम बातों के कारण उनका जीवन और कृतित्व हिन्दी कथा-साहित्य में जिज्ञासा और आकर्षण का विषय बना रहा है। हालाँकि उनके विषय में बहुत-सी जानकारियाँ आज भी अधूरी हैं। उनकी बहुत-सी रचनात्मक सामग्री ऐसी पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी हैं जिनमें कई तो अप्राप्य हैं और कई के प्रकाशन बन्द हुए वर्षो हो गये। पर इससे हम इन्कार नहीं कर सकते कि अजीब व्यक्तित्व रहा है उनका। कहीं कथाकार राजकमल चौधरी समाज, राजनीति और संस्कृति के विविध पहलुओं की एक बिल्कुल नई लेकिन अर्थबोधी व्याख्या करते नजर आते हैं तो कहीं बदलते कला-रूपों के औचित्य-अनौचित्य से टक्कर लेते, कहीं इतिहास में दर्ज मूल्यों और स्थापनाओं को पुनर्विचार की प्रक्रिया में रखे जाने हेतु प्रश्नवाचक की भूमिका में दिखायी देते हैं तो कहीं आदमी-आदमी और आदमी-आदमियत के बीच निरन्तर जारी पूंजी पर आधारित नये-नये खेलों और बनते मिथकों के तिलिस्म को खोलते हुए। स्वतंत्रता के बाद सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था के केन्द्र और द्वीप बदलते रहे हैं जिनका किंचित भी सरोकार आम आदमी के प्रति नहीं रहा है। राजकमल का कथाकार हस्तक्षेप करता है और उच्चवर्गीय तृष्णा तथा तिकड़मों और सामान्यजन की यातनाओं को अपनी रचनाओं में स्थान देता है। कथाकार का हस्तक्षेप शहीदाना न होकर साहस और विश्वास की बुनियाद पर आधारित है। राजकमल की रचनात्मक पक्षधरता के अपने तर्क है। उनके तर्क से सभी सहमत हों, यह जरूरी नहीं, परन्तु असहमति के सामान्य तर्क यहाँ लागू नहीं किये जा सकते। हमारे समाज में इतनी गैरबराबरी क्यों है? शासक और शासित के बीच का द्वन्द क्या और क्यों है? मनुष्य की अधोगामी प्रवृतियाँ क्यों विस्तार लेती गयी हैं? मनुष्य की संवेदना को क्या हो गया है और वह निरन्तर अकेला क्यों होता जा रहा है? जाहिर है कि हम जब राजकमल चौधरी पर कुछ लिख रहे होते हैं या बोल रहे होते हैं तो उन परिस्थितियों का भी मूल्यांकन करना होगा, जहाँ से राजकमल अपनी रचनाओं में 'ऊर्जा' प्राप्त करते रहे और साहित्य के कटघरे में खड़ा होकर सच बोलने की कसमें खाते हुए उन्होंने सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विद्रुपताओं का ऐसा 'हलफनामा' पेश किया कि अपराधी करार दिये गये। उन्होंने अपने समय की राजनीति और समाज के मौजूदा ढाँचे के प्रति असहमति को अपनी रचनाओं का उपजीव्य बनाया है।

**परिदृष्य और हिन्दी कथासाहित्य:-** 'सत्य की मृत्यु' और 'आजादी की अर्थहीनता' का बोध राजकमल चौधरी की कथा-पीढ़ी के मन और



Scanned with OKEN Scanner